अध्याय - प्रथम

वंश की उत्पत्ति एवं प्राचीनता

वंश की उत्पत्ति एवं प्राचीनता

यह चौलुक्य कौन थे? साधारणतः विश्वास किया जाता है कि चौलुक्य और चालुक्य एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द है। चौलुक्य शब्द चालुक्य का संस्कृत रूप है। गुजरात में चौलुक्यों का प्रसिद्ध संम्बोधन 'सोंलकी' है। परन्तु जव बादामी, वैगी और कल्याणी के राजकीय वंशों के लिए चालुक्य और चौलुक्य शब्दों का प्रयोग पाते है तो यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि गुजरात के ये राजकीय वंश एक ही परिवार की विभिन्न शाखाएँ है या एक ही वंश के विभिन्न नाम हैं ? अनहिलवाड़े का वह चौलुक्य वंश जिसका संस्थापक मूलराज था अपने को उपर्युक्त नामो से सम्बोधित करता है, परन्तु अधिकतर विवरणों में चौलुक्य शब्द का ही प्रयोग किया है। इन साम्य नामों का प्रयोग करने वाले किसी भी पूर्व वंश ने अथवा उसकी शाखाओं ने अथवा किसी बाद की शाखा ने व्यवहार रूप में 'चौलुक्यः' शब्द का प्रयोग नहीं किया, परन्तु वैंगी के पूर्वी चालुक्य और कल्याणी के पश्चिमी चालुक्य अपना सम्बन्ध वादामी की मुख्य शाखा (चौलुक्य) से बताते हैं। चौलुक्यों ने ऐसा कभी नहीं किया और न ही वादामी के चौलुक्यों की तरह अपने को हरीत का पुत्र और मानव्य गोत्र से सम्बन्धित किया, परन्तु ब्रम्ह्य के चुलुक से जन्म की कहानी और उनके पूर्वजो का अयोध्या से देशाटन कुछ ऐसी बाते है जो इनको आपस में सम्बधिंत बताने के लिए बाध्य करती है।[1] इसके अतिरिक्त और भी ऐसे ही कितने वंशों को हम चालुक्य, चलुकि और चौलुक्य पुकारते हैं।[2] इन तथ्यों में किस सीमा तक सत्यता है, ये अनहिलवाड़े के चालुक्यों से सम्बन्धित

---

[1] आर. एस. सत्याश्रय, दी ओरीजीन आफ दी चौलुक्याज आई0 एच0 सी0, तृतीय, पृ0 286–410 ।

[2] वे विभिन्न शिलालेख जिनमें चालुक्य वंश का प्रयोग हुआ यद्यपि उनके उच्चारण और अक्षर मे पर्याप्त अन्तर है–

(अ) छिंद के लल्ल का देवल प्रशस्ति, ई0 आई. 1. पृ0 75

(ब) सलक्षण सिंह का झाँसी फ्रगमेन्टरी शिलालेख, वही 1 पृ0 215

थे या नहीं और यदि थे तो किस सीमा तक थे। इस विषय में साक्ष्यों के आभाव में कुछ नहीं कहा जा सकता है, गुजरात के महान चौलुक्य वंश जिसका संस्थापक मूलराज था उसके विषय में इतना विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि विभिन्न शिलालेखों, ताम्रपत्रों तथा समकालीन साहित्य में इस वंश का नाम चौलुक्य, चालुक्य अथवा चुलुक मिलता है। इसके अतिरिक्त चालुक्का, चलुक्य, चालक्य, चौलाकिक, चौलक्क तथा चुलुक शब्दों का प्रयोग भी इस सम्बन्ध में हुआ है।

राजा कीर्तिराज सोंलकी जो लाट प्रदेश में शासन करता था उसके ताम्र पत्र में इस वंश का नाम चालुक्य दिया गया है।[3] उसी के पौत्र त्रिलोनपाल के ताम्रपत्र में चौलुक्य आया है।[4] कीर्ति कौमुदी के रचयिता सोमेश्वर ने भी अपने ग्रन्थ में चौलुक्य और चुलुक्य का प्रयोग किया है।[5] कुमारपाल के महान गुरू जैन आचार्य हेमचन्द्र ने भी चौलुक्य, चुलुक्य, चालुक्का, चुलुक्का और चुलुग का प्रयोग किया है।[6] कृष्ण कवि ने अपने ग्रन्थ रत्नमाला में चालुक्य, चुलुक्य, चुलुक शब्दों का प्रयोग सोलंकी शासकों के

(स) विहारी लाल का चेदि शिलालेख, वही। पृ0 25

(द) महेन्द्र पाल के समय का कन्नौज का शिलालेख, वही 9 पृ0 1

(क) प्रभूत वर्ष कीका दव प्लेटे, वही 5 पृ0 332

(ख) कोठूर से प्राप्त शिलालेख, वही 20, पृ 69

[3] विनया ओरियन्टर जनरल, खण्ड 7 पृष्ठ 88

[4] इत्थ यत्र भवेत्क्षत्रसन्तर्तिर्व्विनता किल। चौलुक्यात्प्रथिता न ध्या .....। आई0 ए0 12 पृ0 201

[5] अथ चौलुक्यभूपालः पालयामास तत्पुरम। कीर्ति कौमुदी 2:1 ।

अणहिलपुरमस्ति स्वतिपाल प्रजानाम्।

जरजिरधुतुल्यैः पाल्यमान चुलुक्यें।।3

विरचयति वस्तुपालश्चुलुक्यः सचिवेषु कविषु च प्रवर .....। वस्तुपाल मन्दिर मे सोमेष्वर रचित प्रशस्ति (आबू पर)

[6] कुन्तेन सर्वसारेणवधील्लसं चुलुक्य राट..... द्वयाश्रय काव्य 5:128

लिए किया है।[7] पृथ्वी राज रासों में सोंलकी वंश के लिए चालुक्का का व्यवहार किया गया है।[8]

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक वंश के लिए विभिन्न वंशों के परिचायक शब्दों का प्रयोग हुआ है, परन्तु अनहिलवाड़े के सोलकीं वंश के लिए कौन सा शब्द उपयुक्त है ? इसके लिए समसामयिक विभिन्न लेखकों के अनेक ग्रन्थ, ताम्रपत्र और उनके शिलालेखों की प्रभूत सामाग्री प्रस्तुत है। उसका सम्यक् निरूपण करने पर यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि सोलंकी वंश के लिए सबसे उपयुक्त शब्द चौलुक्य ही है क्योंकि इस शब्द का प्रयोग सबसे अधिक बार हुआ है और तो और आठ चौलुक्य ताम्रपत्रों में भी जिनमें इस वंश के शासकों की वंशावली दी हुई है, केवल एक ही शब्द " "चौलुक्य" का ही प्रयोग किया गया है।[9]

चौलुक्यों की उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धान्तः-

युगयुगीन परम्पराएंः-

बाहरवीं शताब्दी में एक प्रचलित परम्परा के अनुसार चौलुक्यों का जन्म ब्रह्मा के चुलुक से हुआं। इसकी पुष्टि चौलुक्यकालीन दो शिलालेखों से भी होती है। वडनगर प्रशस्ति के अनुसार देवताओं ने नम्रतापूर्वक जब राक्षसों के अपमान से रक्षा करने की प्रार्थना की तो उस समय वे सन्ध्या–वन्दन करने जा रहे थे। उन्होंने अपने चुलुक में गंगा का पवित्र जल लेकर एक वीर की उत्पत्ति की उस वीर का नाम चौलक्य था, उसने तीनो लोकों को अपनी कीर्ति से पवित्र किया। उससे एक जाति

---

[7] असौं वंश चालुक्यको शुभरीति, पुनीवंश चापोत्कटाको सप्रीति, रत्न माला, पृ0 43।

[8] मुनि प्रगटयौ चौलुक्य, ब्रम्हचारी व्रत धरिय। पृथ्वीराज रासो, आदि पर्व, पृ0 49।

[9] आई0 ए0 6, पृ0 181।

उत्पन्न हुई। इसमें एक से एक शौर्यवान शासक हुए। यह जाति अपनी वीरता के कारण प्रख्यात हुई और उसने समस्त संसार के सर्वसाधारण को आर्शीवाद दिया।[10]

द्वयाश्रय के टीकाकार अभयतिलक जानी ने भी इसी से मिलती जुलती कहानी कही है।[11]प्रबन्ध चिन्तामणि के रचईता मेरूतुंग ने अभयतिलक जानी के कहे गये श्लोक का ही समर्थन किया है।[12] बालचन्द्र सूरि ने बसन्तविलास में वडनगर प्रशस्ति का ही अनुगमन किया है और इस बात का प्रतिपादन किया है कि प्रथम चौलुक्य का निर्माण राक्षसों को नष्ट करने के लिए हुआ।[13]

परन्तु जयसिंह सूरि ने अपनी कृति 'कुमारपाल भुवपाल चरित' में उपर्युक्त विवरणों के बिल्कुल विपरीत लिखा है। उसका कथन है कि उसके नायक के पूर्वजों का जन्म एक महान चौलुक्य से हुआ जो बहुत वीर था। उसने अनेक शत्रुओं कों परास्त किया और अपनी राजधानी 'मधुपदम' में बनायी । उसी से चालुक्य जाति का जन्म हुआ। इन्हीं राजाओं की परम्परा में कुछ समय पश्चात श्री सिंह विक्रम हुआ जिसने समस्त संसार पर विजय प्राप्त कर एक नवीन सम्वत् चलाया। उसका पुत्र हरि विक्रम के शौर्यवान 85 उत्तराधिकारी हुए उसके वाद राम नामक राजा हुआ जिसके पुत्र भट ने शको को नष्ट किया । उसका पुत्र श्री दण्डक हुआ, जिसने पिपासा के गाजा राजाओं को जीता। दण्डक का राज्य कंचिक विलय ने कब्जा लिया। तब वहाँ चन्द्रमा के समान राजराज्ञी हुआ जिसने लीलादेवी से विवाह किया। उन्ही से उत्पन्न शिशु मूलराज था।[14]

---

[10] वडनगर प्रशस्ति, श्लोक 2–3, ई0 आई0 1, पृष्ठ 296।

[11] द्वयाश्रय काव्य,श्लोक 2 पृ0 4।

[12] अयोग्या मातंगाः परिगलित पक्षाः क्षितिभृतो,
जड.प्रातिः कुर्मः फणिपतिरयं च द्विरसनः।
इति ध्यातुधीतुः क्षितविघृतये साध्यचुलुका,
तत्समुक्तस्थां कश्चिद्विलसदसिपट्टः स सुभटः।।

[13] बालचन्द्र सूरि, वसन्तविलास 3:1–2।

[14] जयचन्द्र सूरी, कुमार पाल भुवपाल चरित 1: 16 – 21।

इसके अतिरिक्त कवि विल्हण ने अपने विक्रमांकदेवचरित में लिखा है कि ब्रह्मा के 'चुलुक' से एक वीर उत्पन्न हुआ जिसके वंश में हारीत तथा मानव्य हुए। इन क्षत्रियों ने पहले अयोध्या में शासन किया और तदन्तर दक्षिण दिशा में एक के बाद दूसरी विजय करते हुए आगे बढ़े।[15]

इस प्रकार जयसिंह सूरि को छोड़कर उस युग की जितनी भी कृतियों का ऊपर विवरण दिया गया है, इन सब में चौलुक्यों की उत्पत्ति ब्रम्हा के 'चुलुक' से मानी गयी है। ऐसा प्रतीत होता है कि उस युग में धार्मिक कहानियों का बड़ा ही महत्व था और राजकीय वंश अपनी उत्पत्ति को किसी अलौकिक सत्ता या धार्मिक नायक से जोड़ना गौरव का कार्य समझते थें। यह भी सम्भव हो सकता है कि चौलुक्य शब्द की उत्पत्ति संस्कृत व्याकरण के द्वारा चुलुक्य शब्द से हुई हो और इस कारण प्राचीन लेखकों ने ब्रम्हा के चुलुक से चौलुक्य की कल्पना सहज कर ली होगी, परन्तु पुरातत्व के प्रमाण के बिना कथन अविश्वसनीय है।

चारण और भाटों के कथनः-

चालुक्यों की उत्पत्ति के विषय में भाटों और चारणों के कथन भी कम मनोरंजक नहीं है। उनमें से कुछ का चयन 'टाड' ने किया है। उनके अनुसार परमार, प्रतिहार, चौलुक्य और चहमान सब अग्निकुल से ही सम्बन्ध रखते हैं। 'टाड' ने एक भेंट से प्राप्त कथा के विषय में ऐसा लिखा है कि बहुत दिन हो गये मुनि लोग आबू पर्वत पर हवन वेदी बनाकर यज्ञ सम्पन्न कर रहे थे, परन्तु दैत्यों ने उत्पात मचाना प्रारम्भ कर दिया। हताश पुजारी वर्ग ने वेदी को घेर कर महादेव से प्रार्थना की कि वे उनकी दैत्यों से सहायता करें, तभी हवन की अग्नि से एक प्रकाश पुंज प्रकट हुआ और उसमें से एक पुरूष प्रकट हुआ, परन्तु वह लड़ाकू प्रवृत्ति का नहीं था, अतः

---

[15] कवि विल्हण, विक्रमाकदेवचरित 1:36–39।

ब्राम्हणों ने उसे द्वार का संरक्षक बना दिया तथा उसका नाम प्रतिहार रखा। दूसरा मनुष्य चूलू के रूप में प्रकट हुआ अतः उसका नाम चालुका रखा। इसी तरह तीसरे को परमार और चौथे को चौहान नाम से सम्बोधित किया।[16]

इसके विपरीत एक कथा का निरूपण कनिंधम ने किया है। उसके अनुसार ब्रम्हा के अंश से सोलकीं का जन्म हुआ जिसका नाम ब्रम्हा ने चालुकाराय रखा। शिव के अंश से पुवार का जन्म हुआ। देवी के अंश से पेरियार का जन्म हुआ। अग्नि की प्रज्ज्वलित ज्योति से चौहान जाति का प्रादुर्भाव हुआ।[17]

कनिधंम के आधार का समर्थन तो किसी भी साक्ष्य से नहीं होता, परन्तु प्रथम बात का समर्थन पृथ्वीराज रासो से होता है, उसमें कहा गया है कि आबू पर्वत पर वशिष्ठ ने यज्ञ किया। राक्षसों ने यज्ञ का खण्डन किया। वशिष्ठ की प्रार्थना पर, प्रतिहार, चौलुक्य और परमार प्रकट हुए, परन्तु उसमें कोई भी इतना वीर न था जो राक्षसों को हरा सके तब चौहानों की रचना की गयी उन्होंने राक्षसों को मारकर साधुओं की शांतिपूर्वक यज्ञ पूरा करने का अवसर दिया।

वैसे चारणों और भाटों के कथन विश्वसनीय नहीं है, परन्तु रासों के समर्थन पर बहुत से आधुनिक इतिहासकार भी इस अग्नि–कुल उत्पत्ति के सिद्धान्त से प्रभावित हुए है और गुर्जरों की विदेशी उत्पत्ति सिद्ध करते हुए उन्होंने चालुक्यों को भी इसी से सम्बन्धित किया है,[18] परन्तु ब्यूलर, सामलदास ओझा, हलदर, रासो की ऐतिहासिकता में सन्देह करते है,[19] कि न तो चौलुक्यों के किसी विवरण और न

---

[16] टाड, राजस्थान, द्वितीय संस्करण, पृ0 69 और 63

[17] कनिंधम, एनुअल रिपोर्ट आफ दी अर्किलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया, खण्ड।। पृ0 254।

[18] (अ) जेक्सन, बोम्बे गजिटियर, खण्ड 9 पृ0 483।

(ब) डी0आर0 भण्डारकर, आई0 ए0 22 पृ0 7।

[19] (अ) जनरल ऑफ दी ऐशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल (1887) 5–56।

(ब) सोंलकी राजाओं का इतिहास।

(स) जे0बी0बी0 आर0 ए0एस0 3 पृ0 35।

गुजरात के किसी लेखक की कृति में चौलुक्यों की उत्पत्ति अग्नि–कुल से जोड़ी गयी, परन्तु परमारों को पवित्र अग्नि से उत्पन्न बताया गया है। भीम द्वितीय के तीन शिलालेखों में परमारों की उत्पत्ति अग्निकुल से बताई गयी है। अभयतिलक जानी ने भी द्वयाश्रय काव्य के एक श्लोक की टीका करते हुए परमारों की उत्पत्ति वशिष्ठ द्वारा प्रतिपादित यज्ञ से की है जो उसने विश्वामित्र को पाठ पढ़ाने के लिए किया था।[20]

इस प्रकार यह स्पष्ट विदित होता है कि शिलालेख उत्कीर्ण करने वाले विद्वान और टीकाकार अग्निकुल के सिद्धान्त से भली–भाँति परिचित थे। उन्होंने परमारो को ही अग्निकुल से सम्बन्धित क्यों किया और चालुक्यों को क्यों नही ? यह सब उनके अल्प ज्ञान के कारण नहीं वरन् पूर्ण ज्ञान के कारण था। इसलिए चालुक्यों को न तो अग्निकुल से ही सम्बन्धित किया और न ही परमारों से इसलिए चालुक्यों का सम्बन्ध अग्निकुल के सिद्धान्त से नहीं जोड़ा जा सकता।

इसके अतिरिक्त रासो का मुख्य उद्देश्य चाहमान वंश की उच्चता और उसके अलौकिक गुणों का वर्णन करना था, अतः यदि चन्दबरदाई ने उस युग के समकालीन राजवंशों पर चौहान वंश की श्रेष्टता सिद्ध करने के लिए अग्निकुल के सिद्धान्त की कल्पना कर ली तो यह उसके उर्वर मस्तिष्क की परिचायक है, ऐतिहासिक सत्य की नही।

श्री दशरथ शर्मा ने बीकानेर फोर्ट पुस्तकालय में रासो के प्रारम्भिक संस्करण की तीन अल्प प्रतियाँ प्राप्त की। उनके विचार से यह प्रतियाँ अधिक विश्वसनीय है। इसमें वे बहुत से दोष नहीं है जो पुरानी रासो में है। अग्निकुल सिद्धान्त की चर्चा भी इसमें नहीं की गयी है। अतः दशरथ शर्मा का विश्वास है कि अग्निकुल के सिद्धान्त की कल्पना बाद के संस्करणों रामायण और महाभारत से चुरायी गयी है।[21] सी० एल० वैध भी इसके आन्तरिक साक्ष्यों का निरूपण करके इसी निष्कर्ष पर पहुंचाते है

---

[20] द्वयाश्रय काव्य 16:34।

[21] आई० एच० क्यू० 16, पृ० 738–46।

कि प्रारम्भ में रासों अधिक मात्रा में ऐतिहासिक था परन्तु वाद में समय–समय पर इसमें अनेक बाते जुड़ती गयी।

अतः रासो का यह व्यवधान अग्निकुल सिद्धान्त की सत्यता में स्वयं ही सदेंह करने लगता है। वीकानेर की प्रतियाँ कहाँ तक मान्य है? इस वाद विवाद में तो हम नहीं पड़ते पर इतना विश्वास के साथ कहाँ जा सकता है कि अनेक ताम्र पत्र, शिल्प लेख, पुरातत्व की अन्य सामाग्री आदि कोई भी विवरण इस बात को सिद्ध नहीं करता कि चौलुक्यों की उत्पत्ति अग्नि कुल से हुई। गुजराती लेखकों का इस विषय में कुछ न कहंना भी इस बात का एक और पुष्ट प्रमाण है कि चौलुक्यों के विषय में अग्निकुल का सिद्धान्त निराधार कल्पना है।

डा0 डी0 आर0 भण्डारकर का यह मत है कि चौलुक्य गुर्जर थे और 10 दी शताब्दी तक गुजरात लाट के नाम से जाना जाता था[22] स्वीकार्य नहीं है क्योंकि इसनें अनेक दुर्बलताएं है।[23] अतः अब शिलालेखीय विवरणों की चर्चा कर कर सकते है।

शिलालेखीय विवरणः-

सर्वप्रथम सोंलकी राजा विक्रमदेव के शिलालेख में (वि0स0 1133 और 1183) में यह लिखा है कि चालुक्य (सोंलकी) वंश की उत्पत्ति चन्द्र वंश से हुई जो ब्रम्हा के पुत्र अत्रि द्वारा आविर्भूत हुआ था।[24] बम्बई प्रान्त के धारवाड़ जिले के गोंहाद गाँव के वीरनारायण मन्दिर में यह लेख प्राप्त हुआ है। इस राजा के दूसरे शिलालेख से भी इस कथन की पुष्टि होती है।[25]

सोंलकी राजा कुलोत्तुंग के ताम्र पत्र तथा चोलदेव द्वितीय (वि0स0 1200) के प्रकीर्ण लेख में यह लिखा है कि सोंलकी शासक चन्द्रवंशी, मानव्य गोत्री तथा हरीत

---

[22] जे0 बी0 बी0 आर0 ए0एस0 21 पृ0 413–421।

[23] बी0 बी0 कृष्णराव, आई0एच0 सी0, 3, पृ0 386–410।

[24] आई0 ए0 21, पृ0 167।

[25] कर्नाटक इन्सक्रिपशनस् , खण्ड 1 पृ0 415।

के वंशज थे।[26] मानव्य तथा हरीत कौन थे ? इसका उत्तर इस ताम्रपत्र में नहीं दिया गया है परन्तु एक अन्य शिलालेख में जो पश्चिमी राजा सोलंकी जय सिंह द्वितीय (वि0स0 1082) के समय का है मानव्य और हरीत का इतिहास दिया गया है। इसमें कहा गया है कि ब्रम्हा से मनु और मनु से मानव्य का आविर्भाव हुआ। मानव्य का पुत्र हरीत था और उसका पुत्र पंखशिखी हरीत हुआ। इसका पुत्र चालुक्य हुआ जिसका वंश चालुक्य (सोलंकी) वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ।[27]

राजा पुरूषोत्तम के दो शिलालेखों से पता चलता है कि (वि0 स0 1330–1375) सोलंकी राजा चन्द्रवंशी थे।[28] सोलंकी राज राजा के दानपत्र में (वि0 स0 1079) यह दिया हुआ है कि वह सोमतिलक वंश से है। 'कलिंगत्तुप्परणि' एक तमिल काव्य में सोलंकी राजा कुलोत्तुग चोलदेव का वर्णन है। उससे पता चलता है कि वह चन्द्रवंशी था।[29]

पुरातत्व के इन प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि सोलंकी राजा चन्द्र वंश से एवं दानपत्रों से सम्बन्ध रखते थे। यहाँ पर उपर्युक्त शिलालेखों, ताम्रपत्रों के वृहत संग्रह पर सन्देह उठाया जा सकता है कि ये प्रमाण सीधे अनहिलवाडे के चोंलुक्यों से सम्बन्ध नहीं रखते। यह तर्क किसी सीमा तक समझ में भी आने योग्य है क्योकि आज तक इस समस्या को लेकर बड़ा वाद–विवाद होता रहा है, परन्तु उस युग के प्रसिद्ध लेखक हेमचन्द्र का कथन इन तर्कों को निर्मूल सिद्ध करने में पर्याप्त सीमा तक सहायक है। उनका कथन है कि एक बार सोलंकी राजा भीमदेव और चेदि नरेश कर्णदेव के दूतों का आपस में मिलन हुआ। किसी प्रसंग में राजा भीमदेव के दूत ने पुछा कि हमारे महाराजा कि यह जानने की इच्छा है कि नरेश कर्णदेव हमारे मित्र है

---

[26] गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, सोलंकी राजाओं का इतिहास, पृ06।

[27] कर्नाटक इन्स्क्रिपशनस्, खण्ड 1, पृ0 48।

[28] बोम्बे गजेटियर, खण्ड 1, भाग 2, पृ0 339।

[29] गौरीशंकर, होराचन्द्र ओझा, पृ0 7।

अथवा शत्रु ? इस प्रश्न के उत्तर में चेदिराज कर्णदेव ने कहा कि राजा भीमदेव अविजेय सोम (चन्द्र) वंश के है।[30]

इस प्रकार धार्मिक कथाओं के अविश्वसनीय कथनों, अग्नि कुल के सिद्धान्त और उससे उत्पन्न अनेक सिद्धान्तों को इसलिए स्वीकार नहीं किया जा सकता कि उसके लिए कोई भी ठोस प्रमाण नहीं है। जहाँ तक सोलंकी सम्राटों के समसामयिक शिलालेखों, ताम्रपत्रों का सम्बन्ध है उनसे तो यही प्रकट होता है कि वे चन्द्रवंशी थे। इसकी पुष्टि हेमचन्द्र के द्वयाश्रय काव्य से भी होती है। अतः यह विश्वास किया जा सकता है कि चौलुक्य चन्द्रंवशी थे।

चौलुक्यों का मूल निवास स्थानः-

चालुक्यों के मूल स्थान के विषय में इतिहासकारों में बड़ा भारी मतभेद है। इस वंश का संस्थापक मूलराज था। वह कौन था? 13वीं शताब्दी के प्रसिद्ध कवि कृष्ण लिखते है कि आक्रमणकारी भूवड़ का पुत्र कर्णादित्य, जो चन्द्रादित्य का पिता था। उसके पुत्र का नाम सोमादित्य था, जो भुवनादित्य का पिता था, उसके पुत्र का नाम राजी था। राजी अनहिलपाटक आया और उसने अन्तिम कपोतक सम्राट सामन्त सिंह की बहन से विवाह किया। बाद में इसी राजकुमारी से एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम मूलराज था।[31] ऐसा ही विवरण कुमार पाल चरित तथा अन्य स्थलों पर भी मिलता है कि 720–956 ई0 में कपोतक जो चावड़ा के नाम से प्रसिद्ध थे, पाँचसारा में शासन कर रहे थे, वहाँ के अन्तिम सामन्त सिंह के काल में कन्नौज के कल्याणकल्क के शासक भुवनादित्य के तीन पुत्र राजी, बीजा और दण्डक भिक्षु का वेश धारण कर सोमनाथ की यात्रा को निकले। लौटते समय वे सामन्त सिंह द्वारा आयोजित रथ प्रदर्शन के समारोह में उपस्थित हुए। राजी ने रथ संचालन सम्बन्धित कला की कुछ

---

[30] द्वयाश्रय काव्य 9: 40–59।

[31] रत्नमाला, अनुवादित फोर्बस, जे0 बी0 बी0 आर0 ए0 एस0 9, पृ0 32–5।

ऐसी व्याख्या की कि जिससे सामन्त सिंह प्रसन्न हो गया। इतना ही नहीं उसने राजी को किसी राजवंश का समझकर अपनी बहन लीलावती का विवाह कर दिया। संयोग से लीलावती गर्भवती ही मर गयी। गर्भस्थ शिशु शस्त्रोपचार के उपरान्त निकाला गया। उस समय मूलग्रह था अतः इस शिशु का नाम मूलराज रखा गया। उसी ने वाद में अपने चाचा की हत्या करके राज सिंहासन हस्तगत कर लिया।[32]

उपर्युक्त वर्णनों में सत्यता का अंश किस सीमा तक है यह तो नहीं कहा जा सकता पर कुछ महत्वपूर्ण अनुमान लगाये जा सकते है। 937 ई0 में चालुक्य पुलकेशी अवनीजनाश्रय के नौसरी दानपत्र से यह भली प्रकार प्रमाणित हो जाता है कि आठवी शदी के पूर्वाध में चावड़ावंश गुजरात में राज्य कर रहा था।[33] महीपाल के हडाला दानपत्र से पता चलता है कि कैपस लोग पूर्वी काठियावाड़ तथा मध्य गुजरात में 914 ई0 तक शासन करते रहे।

यूना दानपत्र से विदित होता है कि 839 ई0 तथा वाद में भी कन्नौज के शासकों के चौलुक्य राज्यधिकारी गुजरात में शासन कर रहे थे। इस प्रकार इस निर्णय पर आना उचित ही होगा कि गुजरात के चौलुक्यों का संस्थापक मूलराज चावड़ राजकुमारी का पुत्र था उसने अपने मामा को अपदस्थ कर अनहिलपाटक का राज्य हस्तगत कर लिया। जैन ग्रन्थों में भी यह स्वीकार किया गया है कि गुजरात का प्रथम चालुक्य शासक राजी का वंशज था यह राजी कन्नौज की राजधानी कल्याण के राजा भुवनादित्य का पुत्र तथा अनहिलवाडपाटन के अन्तिम चौड राजा अथवा चावड़ राजा की वहिन लीलादेवी का पति था।[34]

---

[32] कुमारपालचरित, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई 1926 (1–15) बी0 जी0, खण्ड 1 भाग 1, पृ0 156'57 ए0ए0के0 खण्ड2, 262।

[33] बी0 जी0 खण्ड 1, भाग 2 पृ0 187–88 तथा 375।

[34] फोर्वस, रासमाला, खण्ड 1 पृष्ट 49।

प्रबन्ध चिन्तामणि में मेरूंतुग ने लिखा है कि विक्रम सम्वत में राजी अपने दो भाईयों के साथ वेश परिवर्तित कर सोमनाथ पाटन की यात्रा करने गया। यात्रा से लौटते समय अनहिलवाडा के रथ प्रदर्शन समारोह में वे शामिल हुए। राजी से रथ चलाने की व्याख्या सुनकर सामन्त सिंह अत्यधिक प्रभावित हुआ। उसने अपनी बहन लीलादेवी का विवाह उससे कर दिया। प्रसव के समय लीलादेवी की मृत्यु हो गई, किन्तु शिशु जीवित ही निकाल लिया गया। उस समय मूल नक्षत्र था, इसलिए इसका नाम मूलराज रखा गया। मूल राज की शिक्षा दीक्षा उसके मामा के यहाँ हुई तथा उसके मामा ने उसको गोद ले लिया। सामन्त सिंह जब शराब के नशे में होता तो कहता मैं तुम्हें राज्य सत्ता सौंप कर स्वतन्त्र हो जाऊंगा ? किन्तु सामन्त सिंह जब गंम्भीर मुद्रा में होते तो कहते, अभी मेरी इच्छा राज्य छोड़ने की नही है। इस बात से तंग आकर मूलराज ने अपने मामा की हत्या कर दी और राज्य सिंहासन पर अधिकार कर लिया।[35] फोर्वस ने इस विवरण को इस प्रकार स्वीकार किया है कि मूलराज का पिता कन्नौज का न था बल्कि दक्षिण के कल्याण का था।[36] किन्तु यदि मेरूतुंग के ऐतिहासिक तिथिक्रम से उक्त कहानी की तुलना करे तो यह कहानी कसौटी पर खरी नहीं उतरती।

सामन्त सिंह के शासन का प्रारम्भ वि0स0 991
सामन्त सिंह के शासन का अन्त वि0स0 998 — योग 7 वर्ष

राजी का आगमन तथा लीलादेवी से विवाह 998 वि0स0 में हुआ। इसके बाद राजी के लीलादेवी से पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका सरंक्षण उसके मामा ने किया। और उसने अपने मामा की हत्या कर डाली।

---

[35] प्रबन्धचिन्तामणि, पृ0 15–16।

[36] फोर्वस, पुर्वोक्त, पृ0 244।

इस प्रकार राजी के विवाह और मूलराज के इस योग्य होने में कि वह अपने मामा की हत्या कर सके कम से कम 20 वर्ष का समय तो होना चाहिए ही था। परन्तु वि0स0 998 में अनहिलवाडे में राजी का आगमन, उसी वर्ष लीलादेवी से विवाह तथा उसी वर्ष मूलराज का जन्म और उसके मामा की हत्या एक कपोल कल्पित कहानी सी ही प्रतीत होती है और यदि यह स्वीकार करे कि राजी का आगमन इस समय से पहले हुआ तब भी स्थिति सुस्पष्ट नहीं होती क्योंकि सामन्त सिंह के शासन का अन्तिम वर्ष वि0 स0 998 है, इसलिए मेरूंतुग की पूरी कथा जनश्रुति और कल्पना के आधार पर गढ़ी हुई है। द्वयाश्रय की रचना हेमचन्द्र के अतिरिक्त अन्य लेखकों का भी मिश्रण हो सकती है। मेरूतुंग के ऐतिहासिक वृत्त से यह अधिक प्रमाणिक तथा विश्वसनीय है।[37] इस काव्य का इस विषय में मौन रहना उपर्युक्त तर्क की पुष्टि करता है। इसमें केवल यही कहा गया है कि मूलराज चौलुक्य था। उसकी शक्ति अत्यधिक थी और वह वीर था।

मूलराज के दानपत्रों में उसके वंश की उत्पत्ति का कोई विवरण नहीं मिलता परन्तु इतना अवश्य मिलता है कि मूलराज अपने को सोलंकियों (चालुकिकानप्य) का वंशज बताता है तथा महान राजा राजी उसका पिता था। इसमें यह भी कहा गया है कि उसने सारस्वत मण्डल (सरस्वती नदी से सिंचिंत प्रदेश) पर अपने बाहुबल से विजय प्राप्त की थी।[38]

चौलुक्य कालीन वडनगर प्रशस्ति से पता चलता है कि प्रसिद्ध वीर मूलराज राजाओं के मुकुट का ऐसा बहुमूल्य ओर बेजोड़ मोती था जिसने अपने वंश की प्रसिद्धि चारों ओर फैलाई.....उसने चावड़ा वंश की राजकुमारी के भाग्य को उत्कर्ष के उच्च शिखर पर पहुँचाया। राज्यलक्ष्मी उसकी दासी थी। उससे सब प्रसन्न थे।

---

[37] आई0 ए0 6, पृ0 182।

[38] खादी ग्रान्ट, आई0 ए0 6, पृ0 191।

ब्राम्हण, भाट और सेवक सभी उसके गुण गाते थे। उसकी वीरता के कारण सभी क्षेत्रों के राजाओं की सभी क्षेत्रों की सौभाग्य लक्ष्मी इस समय उसके असिकक्ष में रहने में प्रसन्नता का अनुभव करती थी।[39]

वडनगर प्रशस्ति का विवरण मेरूतुंग[40] के विवरण से नही बल्कि मूलराज के उस दानपत्र[41] से अधिक मिलता है जिसमें उसे सरस्वती का विजेता कहा गया है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि मूलराज अनहिलावाड़े कार प्रथम चौलुक्य राजा था तथा उसका पिता चौलुक्य वंश के मूल स्थान का राजा था तथा मूलराज ने राज्य की खोज मे उत्तरी गुजरात पर आक्रमण किया।

अतः मूलराज के पिता राजी का मूल स्थान कहाँ था? सुकीर्ति–संकीर्तन के रचयिता अरिसिंह और रत्नमाला के लेखक कृष्ण जी दोनों ही राजी का विवरग लिखते है, परन्तु रत्नमाला में इसका विस्तृत विवरण मिलता है। इसके अनुसार भूयड़ नाम का चौलुक्य राजा था जिसका शासन कान्य कुब्ज के कल्याण कटक में था। भूयड़ ने गुजरात पर आक्रमण करके कपोतक राजा जयशेखर को हराया। उसकी रानी जगंल में भाग गई जहाँ उसने एक पुत्र को जन्म दिया। यही शिशु वनराज के नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसने अनहिलावाड़ा में कपोतक वंश की नीव रखी। आक्रमणकारी भूयड़ के वाद कर्णादित्य, चन्द्रादित्य, सौभादित्य, भुवनादित्य शासक हुए। भुवनादित्य के पुत्र का ही नाम राजी था।[42]

मेरूतुंग चितांमणि में लिखता है कि कान्यकुब्ज के कल्याण कटक में भूयराज था इसके बाद शासक मज्जुलदेव हुआ जो राजी का पिता था। राजी का पुत्र मूलराज था यहाँ पर डा0 ए0 के0 मजूमदार ने यह भ्रम उठाया है कि क्या भूयड़ और भूयराज

---

[39] वडनगर प्रशस्ति, श्लोक 2–6, ई0 आई0 1, पृ0 293–305।

[40] प्रबन्ध चिन्तामणि, पृ0 16।

[41] आई0 ए0 6 पृ0 192।

[42] रत्नमाला, अनुवादित फोर्बस, जे0 वी0 बी0 आर0 ए0 एस0 9, पृष्ठ 32–35।

दोनों एक ही व्यक्ति को बताते है अथवा भिन्न थे? वे प्रबन्धचितामणि की तुलना स्कन्दपुराण के प्रबन्ध स्कन्द के उस प्रसंग से करते है जिसमें कहा गया है कि कान्य कुब्ज में भोज से कहा कि रायवतक के जगंल में बत्तख के मुख सी सुन्दर मुखवाली एक स्त्री है। भोज अपनी सेना के साथ वहाँ गया और उसको कान्यकुब्ज ले आया। वहाँ आकर उसने अपने पहिले जन्मो की बात बताई। भोज इस बात से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने उसे अपने पुत्र के सरंक्षण में दे दिया। इस भोज की तुलना प्रतिहार मिहर भोज से की गई।[43]इस आधार पर वे कुछ सम्भावनाएं प्रकट करते हैं–

1. मिहिर भोज ने सूरक्षेत्र में एक सैनिक अभियान किया।
2. हाडला और यूना दानपत्रों से प्रकट होता है कि गुजरात में प्रतिहारों के सामन्त दसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक थे। शायद इस परम्परा का प्रारम्भ भोज के आक्रमण से प्रारम्भ हुआ जिसका वर्णन स्कन्दपुराण में गलती से नहीं किया गया है।
3. मेरूतुंग के वर्णन की मुख्य बाते स्कन्पुराण की कथा से मिलती है।
4. रत्नमाला का आक्रमणकर्त्ता भूयड़ नहीं बल्कि भोज था।
5. हडाला दानपत्र के चौलुक्य और यूना दान पत्र के कपोतक गुर्जर प्रतिहारों के सामन्त थे।

परन्तु इन तर्कों में अधिक बल नहीं हैं जिसको वे स्वयं भी स्वीकार करते है क्योकि दो ग्रन्थों[44] ने उसे चौलुक्य कहा है। दूसरे तिथि सम्बंधी कठिनाई है–

प्रबन्ध चिन्तामणि–वनराज का सिंहासना रोहण 802 वि० स०

रत्न माला–जयशेखर और भूयड़ऋ का युद्ध– 752 वि०स०

मिहिर भोज की तिथि –893 वि०स०

---

[43] चालुक्याज इन गुजरात, पृ० 20।

[44] प्रबन्ध चिन्तामणि, सम्पादित जिन विजय मुनि, पृ० 11। डा० एच० सी० रायचौधरी, आई० एच० क्यू० 6, पृ० 129–132।

इस प्रकार इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता मेरूंतुग ने कही भी चावड़ा और भूयराज के युद्ध के विषय में नही लिखा। उपर्युक्त सम्भावना केवल सम्भावना ही है जिसके आधार पर निश्चयपूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु यदि तथ्यों का निरूपण ठीक से करें तो एक निश्चित रूप–रेखा प्रस्तुत की जा सकती है।

गुजरात के इतिहासकारों का यह कथन कि कन्नौज के कल्याण कटक में भूयड़ (भूयराज, भूपति) ने जयशेखर को पराजित कर गुजरात को अपने अधीन कर लिया, इस वंश का अन्तिम राजा भुवानादित्य कल्याण का शासक हुआ–वह राजी का पिता था।

यह कल्याण कहा का था, इसकी अवस्थिति कहाँ थी। इस विषय में रासमाला के लेखक फार्वेस इस कल्याण को दक्षिण में बताते है जिनका आधार यह है कि दक्षिण का कल्याण आठवीं शताब्दी पूर्व चालुक्यों की राजधानी था, क्योकि कन्नौज में इस नाम के नगर का कोई पता नहीं चलता,[45] परन्तु चौलुक्यों के मूल प्रदेशों के निवासियों के आधार पर जो धारणा डा0 ब्यूलर ने प्रकट की है वह भी उतनी ही प्रबल है।[46]इस प्रकार कल्याण की स्थिति को ठीक से प्रकट करने के लिए कुछ तथ्य दे सकते हैं।

गुजरात के चौलुक्य अपने को सोलंकी कहते है जबकि दक्षिण के चौलुक्य अपने लिए सदैव चालुक्य ही प्रयोग करते है। यदि वे दक्षिण से सीधे आए तो उन्होने अपने को 'चौलुकिक' क्यों कहा? इसका एक मात्र कारण यह हो सकता है कि उनका दक्षिण से कोई सम्बन्ध नहीं था। दोनों वंशों की वंशावली में भी साम्य नहीं है। मूलराज को सिंहासन पर बैठते ही तेलंगाना तेलपा द्वारा वरप के नेतृत्व में भेजी हुई सेना से सामना करना पड़ा था। इस बात से यह प्रकट होता है कि दोनों में मैत्री सम्बन्ध न थे। गुजरात के औदीच्य (उत्तरी) ब्राम्हण आज तक प्रसिद्ध है जिनके

---

[45] फोर्वस, पूर्वोत्त।

[46] जी0 ब्यूलर, ए0 कन्ट्रीव्यूशन टू दी हिस्ट्री आफ गुजरात, आई0 ए0 6, पृ0 –281।

संस्थापक मूलराज ओर उसके उत्तराधिकारी थे। इन सब कारणों से चौलुक्य उत्तरी भारत के ही थे दक्षिण के नहीं।

तो फिर कन्नौज के चौलुक्य और दूसरे कल्याण की स्थिति क्या थी? आठवीं शताब्दी से दसवीं शताब्दी तक कन्नौज का इतिहास अस्पष्ट है। सम्भव है कि भू–पति और उसके उत्तराधिकारी उसी युग में हुए हो। उनके पूर्वज उत्तर से आए और उन्होंने अयोध्या तथा अन्य नगरों पर शासन किया था।[47] कन्नौज के जिलों में चौलुक्य राजपूत जो आज भी विद्यमान है इस बात का सकेंत करते है कि चौलुक्य उत्तरी भारत के ही थे। जहाँ तक दूसरे कल्याण के अस्तित्व का सम्बन्ध है वे प्राचीन भारत में कई थे– बम्बई के निकट का कल्याण तथा दक्षिण का कल्याण। यह सम्भावना कि अतीत में कभी दक्षिण के कल्याण से उत्तर के चौलुक्यों का सम्बन्ध रहा हो भ्रम सा उत्पन्न कर देता है। परन्तु वरूणाशर्मक दान पत्र से स्थिति और भी स्पष्ट होती है। मूलराज के समय के इन ताम्रपत्रों में उसके पुत्र ने अपेने पिता को वल्यकाचींप्रभु का भत्त बताया है। जय सिंह सूरि अपने ग्रन्थ कुमार पाल भुवपालचरित में कांचीवल्य को राजी का पिता बताता है। उसके अनुसार इस वंश का संस्थापक बहुत वीर था और चौलुक्य कहलाता था उसने अपनी राजधानी मधुपदम से अनेक शत्रुओं को नष्ट किया। मधुपदम की तुलना मथुरा से की जा सकती है।

इन कथनों में किस सीमा तक सत्यता का अंश है उसके विषय में तो नहीं कहा जा सकता परन्तु विभिन्न साक्ष्यों के विश्लेषण के पश्चात इतना विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि चौलुक्यों के वंश का संस्थापक उस राजा का पुत्र था। जो उत्तर भारत का निवासी था। मूलराज ने गुजरात पर विजय प्राप्त की और अनहिलवाडे के चौलुक्य साम्राज्य का जन्म हुआ।

---

[47] आई0 ए0 14, पृ0 50–55।